(4)

ग्रामीण भारत में सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप

(i) जातिगत स्तरीकरण (ii) वर्गव्यवस्था :- मालिक, साहूकार एवं जमींदार वर्ग, किसान वर्ग। मजदूर अथवा श्रमिक वर्ग।

कृषक समाज

(1) कृषक भूमि से जुड़ा होता है (2) समाज में निम्न स्थिति (3) मजदूरो का पूरक (4) निम्न आर्थिक स्थिति।

लोक संस्कृति Folk Culture

लोक समाज की संस्कृति को ही लोक संस्कृति के नाम से पुकारा गया है लोक समाज को रेडफील्ड ने एक ऐसा समाज माना है जिसमे नगरीय समाज से विपरीत प्रकार की विशेषताए पायी जाती है यह एक ऐसा समाज है जिसका आकार छोटा होता है, तथा जिसमे अकेलापन, अशिक्षा, समानता, समूह दृढ़ता की भावना एवं जीवन का रूढ़िगत रूप पाया जाता है। ऐसे समाज की अन्य विशेषताओ के रूप मे कानून का अभाव, परम्परागत प्रकार का व्यवहार जो प्रमुखतः वैयक्तिक एवं आलोचना रहित होता है, परिवार तथा नातेदारी समूह के लोगो के क्रिया कलापो में एकता, धर्म का प्रभाव, अर्थव्यवस्था का बाजार के बजाय प्रस्थिति पर आधारित होना तथा बुद्धिजीवी वर्ग के चिन्तन का अभाव आदि प्रमुख है।

लोकसंस्कृति की विशेषताएं

(1) लोक संस्कृति मौखिक सांस्कृतिक परम्परा है। (2) लोक संस्कृति को जीवन के एक सामान्य ढंग के रूप मे देखा जा सकता है। (3) सृजन करने की शक्ति (4) लोकसंस्कृति का अभिजात संस्कृति से आदान प्रदान होता है।

unit-2

जी. एस. घुरिये : जाति

भारत मे समाजशास्त्र के साथ गोविन्द सदाशिव घुरिये का नाम बड़े सम्मान के साथ जुड़ा हुआ है। इनका जन्म 12 दिसम्बर 1893 मे महाराष्ट्र के मालवा क्षेत्र के एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार मे हुआ था।
रचनाये - जाति एवं उसका व्यवसाय, भारतीय वस्त्र एवं उसका परिधान आदि रचनाये की।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

मदान - "जाति एक बन्द वर्ग है।"
कूले - "जब एक वर्ग पूर्णतः आनुवांशिकता पर आधारित होता है तो हम उसे जाति कहते है।"
इन परिभाषाओ से स्पष्ट है कि जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित है जो अपने सदस्यो पर खान-पान, विवाह, पेशा, और सामाजिक सहवास सम्बन्धी अनेक प्रतिबन्ध लागू करता है।

जाति प्रथा की विशेषताएं :

① समाज का खण्डात्मक विभाजन ② संस्तरण - ब्राह्मण व शूद्रों । ③ भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध । ④ नागरिक एवं धार्मिक विशेषाधिकार, ⑤ विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध ⑥ अन्य पेशे चुनने पर प्रतिबन्ध ।

जाति व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले कारक

① पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता ② औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ③ धन का बढ़ता महत्व ④ स्वतन्त्रता आन्दोलन ⑤ प्रजातन्त्र की स्थापना ⑥ धार्मिक आन्दोलन ⑦ यातायात एवं संचार के साधनों में उन्नति । ⑧ स्त्री शिक्षा का प्रसार ⑨ संयुक्त परिवारों के विघटन ⑩ जाति पंचायतों का ह्रास ⑪ जजमानी प्रथा की समाप्ति ⑫ नवीन कानूनों का प्रभाव -

जाति व्यवस्था में आधुनिक प्रवृतियां

① ब्राह्मणों की स्थिति में गिरावट ② जातीय संस्तरण में परिवर्तन ③ पेशे के चुनाव में स्वतन्त्रता ④ भोजन सम्बन्धी प्रतिबंधों में परिवर्तन । ⑤ विवाह संबन्धी प्रतिबन्धों में परिवर्तन ⑥ जातियों के बदलते हुए सम्बन्ध - ।

ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय

मैकाइवर तथा पेज - "किसी छोटे या बड़े समूह के सदस्य जब साथ-2 इस प्रकार रहते है कि वे किसी विशेष प्रकार हित में ही भागीदार न होकर सामान्य जीवन की आधारभूत स्थितियों में भाग लेते हैं, तो ऐसे समूह को हम समुदाय कहते हैं।"

समुदाय की विशेषताएं

① एक सामान्य निश्चित भू-भाग ② सामुदायिक भावना ③ सामान्य जीवन ④ समानताओं का क्षेत्र ⑤ स्वतः जन्म ⑥ आत्मनिर्भर

इरावती कर्वे : भारत में नातेदारी Kinship in India

नातेदारी रक्त एवं विवाह से सम्बन्धित व्यक्तियों के बीच सामाजिक संबंधों और सम्बोधनों की वह व्यवस्था है जो इन सम्बन्धों से जुड़े हुए व्यक्तियों को उनके सामाजिक, पारिवारिक तथा नैतिक अधिकारों और कर्त्तव्यों का बोध कराती है। उदाहरण के लिए पिता-पुत्र, भाई-बहन, दादा-पौत्र, चाचा-भतीजा के सम्बन्ध रक्त पर आधारित होते हैं, दूसरी ओर किसी स्त्री का अपने पति अथवा सास व ससुर से सम्बन्ध या एक स्त्री का अपने देवर सम्बन्ध अथवा जीजा-साली का सम्बन्ध विवाह सम्बन्ध का उदाहरण हैं। ऐसे सभी और ननद से सम्बन्ध विवाह सम्बन्ध का उदाहरण हैं। ऐसे सभी सम्बन्धों की व्यवस्था को ही हम नातेदारी व्यवस्था या बन्धुत्व व्यवस्था कहते हैं।

भारत में नातेदारी

① प्राचीन ग्रन्थों पर आधारित दृष्टिकोण

② मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण
- वंश क्रम पर आधारित दृष्टिकोण
- विवाह सम्बन्ध पर आधारित दृष्टिकोण

(6) सामाजिक संरचना में नातेदारी की भूमिका एवं महत्व :-

(1) विवाह एवं परिवार का निर्धारण (2) वंश, उत्तराधिकार एवं पदाधिकार का निर्धारण (3) आर्थिक हितों की सुरक्षा (4) सामाजिक दायित्वों का निर्वाह (5) मानसिक संतोष (6) मानवशास्त्रीय ज्ञान का आधार।

एम. एन. श्रीनिवास : संस्कृतीकरण Unit - III

दक्षिण भारत के कुर्ग लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के विश्लेषण में डा० श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण शब्द को सर्वप्रथम काम में लिया एवं अवधारणा के रूप में इसका प्रयोग परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना व संस्कृति गतिशीलता की प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए गया। मैसूर के कुर्ग लोगों का अध्ययन करते समय डा० श्रीनिवास ने पाया कि निम्न जातियों के लोग ब्राह्मणों की कुछ प्रथाओं को अपनाते तथा अपनी स्वयं की कुछ प्रथाओं जैसे- मांस खाने, शराब का प्रयोग, पशुबलि आदि छोड़ने में लगे हुए थे। उनके ऐसा करने का उद्देश्य जातीय संस्तरण की प्रणाली में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाना था वे ब्राह्मणों की भोजन संबंधी आदतों, उनकी वेष-भूषा तथा कर्मकाण्डों को अपना अपनी स्थिति को ऊँचा उठाने का प्रयत्न कर रहे थे। गतिशीलता की इस प्रक्रिया को श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण नामक शब्द का प्रयोग किया।

"संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचार धारा और पद्धति को बदलता है, समान्यतः ऐसे परिवर्तन के बाद निम्न जाति जातीय संस्तरण की प्रणाली में स्थानीय समुदाय में उसे जो परम्परागत रूप से जो स्थिति प्राप्त है उससे उच्च स्थिति का दावा करने लगती है। सामान्यतः बहुत दिनों तक बल्कि वास्तव में एक दो पीढ़ियों तक दावा किये जाने के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।"

प्राचार्य 24/09/
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान,
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

संस्कृतिकरण की विशेषताएं

(1) संस्कृतीकरण सामाजिक गतिशीलता को प्रकट करनेवाली एक प्रक्रिया है।
(2) संस्कृतीकरण केवल हिन्दु जातियों तक सीमित नहीं है।
(3) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया का संबंध किसी एक व्यक्ति या परिवार से नहीं वरन् एक समूह से है।
(4) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की द्योतक है।

संस्कृतीकरण तथा प्रभुजाति :-

श्रीनिवास का मत है कि अनेक स्थानों पर स्थानीय प्रभुजातियां संस्कृतीकरण का आदर्श रही हैं। प्रभु जाति से तात्पर्य वह जाति जो उस गांव या समुदाय में संख्या की दृष्टि से अधिक हो, जिसका स्थानीय कृषि योग्य भूमि के बड़े अंशों पर स्वामित्व हो, जिसके पास आर्थिक, राजनैतिक शक्ति हो, और जिसे जातीय संस्तरण में